शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संत रविदास जी की विलक्षणता

डॉ. सुरेश कुमार
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
उकलाना मण्डी
हिसार, हरियाणा (भारत)

शोध संक्षेप

संत रविदास मध्य युग के महान कवि थे। उनके काव्य में अनुभूति की प्रधानता है। रविदास जी अन्य संत कवियों से विलक्षण रहे हैं। उनकी यह विलक्षणता उनके व्यक्तित्व, साहित्य (ब्रह्म, जीव, जगत) तथा सांसारिक पक्षों में स्पष्ट देखी जा सकती है। उनकी विलक्षणता की 'भक्तमाल' के रचनाकार श्री नाभादास जी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उनकी वाणी सर्वोतम काव्य का नमूना है। उनकी वाणी नीरक्षीर विवेक वाली है। शुद्ध, सात्विक व पवित्र है।

भूमिका

संत रविदास मध्य युग की महान विभूति थे। वे मानवतावादी दर्शन, विलक्षण प्रतिभा तथा व्यक्तित्व वाले संत थे। हमारे विद्वतजनों का ध्यान संत साहित्य के प्रति कम ही रहा है। कई विद्वान तो संत साहित्य को साहित्य ही नहीं मानते अपितु उसे साम्प्रदियक या निम्न कोटि का साहित्य कहते हैं। जिन विद्वानों का ध्यान संत साहित्य की ओर गया उन्होंने भी समग्र रुप से उनके साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया। अधिकांश विद्वान एवं संतों को कबीरादि अथवा नानक आदि निर्गुण संत कवि कह कर इति श्रीकर लेते हैं। संत रविदास तो इस उपेक्षा का सर्वाधिक शिकार रहे हैं। संत काव्य के प्रति यह दुर्भाव स्वयं गोस्वामी तुलसीदास के समय से ही चला आ रहा है। जब उन्होंने कलियुग के लक्षण बताने के बहाने, कुछ संतों पर उनकी निम्न जाति के कारण तथा अब्राह्मण होने के कारण तीखा व्यंग्य किया था।

आधुनिक समय में भी हिन्दी के कुछ विद्वानों ने संत वाणी की निंदा की है। आचार्य शुक्ल तो इसे साहित्य में रखने के लिए भी सहमत नहीं हैं। सूर और तुलसी के प्रेम में अंधे होकर उन्होंने लिखा है, "निर्गुण मार्गी संत कवियों की परम्परा में कम ही ऐसे कवि हुए हैं जिनकी रचना साहित्य के अंतर्गत आ सकती है। उसमें मानव जीवन की भावनाओं की वह विस्तृत अभिव्यक्ति नहीं है जो सामान्य जन समाज को अपनी ओर आकृष्ट कर सके। इस तरह के संतों की परम्परा चाहे निरन्तर चलती रही तथा नए पंथ निकलते रहे, पर देश के सामान्य साहित्य पर उनका कोई प्रभाव न रहा।"1

पंडित परशुराम चतुर्वेदी ने अपनी 936 पृष्ठों की 'उत्तरी भारत की संत परम्परा' रचना में रविदास के बारे में केवल 10 पृष्ठ ही रखे हैं। उसमें भी कुछ पदों की व्याख्या मात्र है। कई गलत तथ्य भी हैं, जैसे - सेन नाई और कबीर साहब इनके समय तक मर कर प्रसिद्ध हो चुके थे।"2 आचार्य द्विवेदी ने कबीर पर बहुत गहरा और गम्भीर अध्ययन प्रस्तुत किया है, किन्तु अन्य संतों को कबीर आदि निर्गुणवादी संत'3 कह कर उनके विषय में विचार ही नहीं किया। द्विवेदी जी ने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में केवल कबीर नानक सूरदास, नंददास, तुलसीदास, दादू, सुन्दरदास, रज्जब आदि संतों के विषय में ही विचार किया है। संत रविदास के विषय में ढूंढने से भी कोई वाक्य नहीं मिलता। अस्तु यहाँ हम संत रविदास के विषय में कुछ ऐसी बातें बता रहे हैं, जिनमें से वे अपने समकालीन संतों से तथा अपने गुरु भाइयों से विशेष रूप से विलक्षण दिखाई देते हैं। यहां इन्हीं विलक्षणताओं को मुख्य रूप से प्रस्तुत किया गया है।

संत रविदास की भक्ति

संत रविदास जी मूलतः एक दिव्यात्मा थे, उन्होंने अपना कोई अलग पंथ, सम्प्रदाय या समाज स्थापित नहीं किया। ब्रिगस महोदय ने 'रैदासी सम्प्रदाय' की बात अवश्य की है। आज भी' रविदास सम्प्रदाय' की बात यत्र-तत्र उठती है, पर यह सत्य है कि ऐसी कोई परिकल्पना न उनके कार्यकाल में ही की गई है और न ही उनकी वाणी में ऐसा कोई संकेत मिलता है। सांसारिक लोभ लालसा रखने वाले जीव को सम्प्रदाय चलाने की चिंता हो सकती है पर संत रविदास जैसे पूर्ण संत तथा लोकेषणा से दूर रहने वाले ब्रह्म ज्ञानी महात्मा को इसकी तनिक भी आवश्यकता थी, न लालसा। आज यदि इस नाम का सम्प्रदाय कहीं प्रचलित है तो वह बहुत बाद की बात है। उन्होंने अपने समय में स्वयं या उनके किसी शिषय में ऐसा कोई पंथ स्थापित नहीं किया था। यही बात उनकी निरहंकरिता और भक्ति की पराकाष्ठा की परिचायक है।

संत रविदास जी की दूसरी विलक्षणता यह है कि वे एक सर्वोतम कवि थे। भक्ति भाव से सराबोर होकर जो शब्द उन्होंने अपने प्रति, जीव और जगत के प्रति, प्रभु और उसकी लीला के प्रति उच्चरित किए हैं, वे काव्यकला की दृष्टि से सर्वोत्तम काव्य का नमूना कहे जा सकते हैं। गुरु ग्रंथ साहब में संकलित वाणी में जो माधुर्य, गतिप्रवाह, सरलता, आत्मिक रस, भाव प्रवणता, उदारता एवं सौंदर्य रविदास वाणी में प्राप्त होता है, वह अन्यत्र सुलभ नहीं। इसीलिए तो श्री नाभादस जी ने आपकी वाणी को संदेह ग्रन्थियों का खंडन करने वाली 'विमल वाणी' कहा है।

संत रविदास वाणी की एक अन्य विलक्षणता यह है कि कबीर के गुरु भाई व समकालीन होने के बावजूद भी आपने स्त्री जाति की निंदा वैसी नहीं की जो कबीरादि अन्य संतों ने की है। 'नारी की झांई परत अंधा होत भुजंग, कबिरा तिनकी कौन गति नित नारी के संग', 'नारी बड़ा विकार', 'ढोल गंवार, शूद्र, पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' जैसे निंदावचक शब्द रविदास वाणी में कहीं देखने तक को नहीं मिलते तथा न ही कबीर की तरह उन्हें घर गृहस्थी से वैराग्य हुआ।4 इन सबके विपरीत नारी का मां रूप, सुहागिन पत्नी का रूप उनकी वाणी में सुन्दर रीति से व्यक्त हुआ है। निम्नलिखित पद में यद्यपि पति रूप में परमेश्वर की कल्पना की गई है, तो भी यह पद उनके स्त्री पुरुष संबधों का सूचक भी है-

सहु की सार सुहागिन जाने तजि अभिमानु सुख रलिआं मानै।
तन मन देइ न अंतरु राखै, अवरा देखि न, सुनै अभाखै।"5

इसी तरह एक पत्नी व्रत धारण करने की प्रेरणा देते हुए पर स्त्री गमन की निंदा करते हुए कहते हैं-

परतिय संग भलौ जौ होवै, तो राणौ, रावन देखि रे।6

पति परमेश्वर के प्रेम में अनुरक्त, अपना अस्तित्व मिटाकर, गर्व अभिमान त्याग कर पति के साथ एक रस, एकचित, एक प्राण होने वाली

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सती नारी का वर्णन संत रविदास जी जिस दृष्टांत रुप में करते हैं, वह द्रष्टव्य है-

जौं लौं पिअ रा मन नहि आई, का सोरह संयगार बनाई
सोई सती रविदास बखानी, तन मन स्यूं पिअ रंग समानी।7

संत रविदास वाणी की एक अन्य विलक्षणता का यह है कि आप निर्गुण और सगुण के विवाद में कभी नहीं पड़े अपितु एक समन्वयवादी संत की तरह दोनों प्रकार की उपासना पद्धति में एकरसता स्थापित करने का प्रयास किया है। संत अनंतदास के अनुसार आप पहले सगुणेपासक थे, तत्पश्चात कबीर जी की प्रेरणा द्वारा निर्गुण ब्रह्म की उपासना में अनुप्रेरित हुए। मगर निर्गुणवादी बन कर भी वाद-विवाद में पड़कर सगुण उपसना की भर्त्सना नहीं की अपितु दोनों में एकत्व के दर्शन किए हैं।

वास्तविकता तो यह है कि संत रविदास जी भक्ति को किसी पद्धति विशेष में बांधकर नहीं रखना चाहते, उनके अनुसार प्रत्येक ऐसा व्यक्ति भक्ति का अधिकारी हो सकता है, जिसमें अपना आपा मिटाकर, प्रभु की नियति मानकर, उसकी कृपा दृष्टि पर नजर रखते हुए सब चित वृतियां उसके श्री चरणों में नयौछावर करने की प्रवृति हो।

संत रविदास जी के कुछ पक्षों में मौलिक उद्भावन के भी दर्शन होते हैं। आप प्रभु को मधुर उपालम्भ देकर अपनी निकटता प्रकट करते हैं कि प्रेम का आधार तो समानता और समकक्षता होता है, पर यह कैसी समानता कि वह तो हमें देख सकता है, पर हम उसे नहीं देख सकते। पर प्रीति की मांग तो यही है कि प्रेम पात्र एक दूसरे को बराबर सामने देख सके, द्रष्टव्य है-

नरहरि चंचल है मति मोरी, कैसी भगती करुं राम तोरी
तू मोहि देखे हौं तोहि देखूं प्रीति परस्पर होई।
तू मोहि देखै हौं तोहि न देखूं, इह मति सब बुरि खोई।।8

इसी तरह एक अन्य पद में संत रविदास जी प्रभु को प्रेमातिरेक में मधुर उपलम्ब ही नहीं देते अपितु एक प्रेम पूर्ण चुनौती भी देते हैं यदि उनमें शक्ति है तो उसके प्रेम पाश से मुक्त होकर दिखलाए। जीव तो प्रभु की भक्ति द्वारा सांसारिक बंधनों से मुक्त हो गया है, पर जिस जीव ने प्रेमपाश में स्वयं हरि को ही बाँध लिया है, वह प्रभु कैसे मुक्त हो सकेगा-

जऊ हम बांधे मोहपाश, हम प्रेम बंधनि तुम बांधे
अपने छुटन को जतनु करहु हम छूटै तुम आराधे।"9

संत रविदास जी की विलक्षणता उनके स्वभाव से ही दृष्टिगोचर होती है। अक्सर कहा जाता है कि कबीर जितने अक्खड़ व मुंहफट थे, रविदास जी उतने ही सुशील, विनम्र और मधुरभाषी थे। युगीन ब्राह्मणवाद के लिए जहां कबीरदास गालीनुमा भाषा में ललकार उठते हैं 'जे तू बाम्हण, बाम्हणी जाइआ, आन बाट काहे नहीं आइआ' वहीं रविदास अपने विरोधियों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं। आपने कहीं भी दुर्वचन नहीं बोले, अपितु अपने आपको नीच, अपराधी, कीटदास, दुरमति आदि कहकर अपनी नम्रता, मधुरता व प्रेमानुभूति की अनूठी मिसाल पेश ही है। यही नहीं उन्होंने कहीं भी अपनी जाति को छिपाने का प्रयास नहीं किया अपितु अपनी निम्न जाति पर सर्वत्र स्वाभिमान प्रकट किया है-

मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा

तुम सरनागति राजा रामचंद, कहि रविदास चमारा।।10

कहै रविदास राम जप रसना, काटे जम की फांसी रे।11

निष्कर्ष

संत नाभादास ने आपके जीवन व व्यक्तित्व की मुक्त कंठ से जो प्रशंसा की है वह आपकी विलक्षण प्रतिभा की ही परिचयक है। संत रविदास जी की पवित्र वाणी शंकाओं को दूर करने में अत्यंत निपुण, शुद्ध, सात्विक एवं सदाचार का संदेश देने वाली है। वेद और शास्त्र के अनुकुल सदा प्रवहमान है। सभी समकालीन संतों ने आपकी प्रशंसा करते हुए आपके ज्ञान में विश्वास प्रकट किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, 37वां संस्करण, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, सं. 2057, पृष्ठ 64

2 पं. परशुराम चतुर्वेदी उत्तरी भारत की संत परम्परा, भारती भण्डार प्रयाग, तीसरा संस्करण 1972, पृष्ठ 240

3 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2005, पृष्ठ 39-49

4 नारी तो हमहु करी जाना नाही विचार, जब जाना तब पर हरि, नारी बड़ा विकार

5 बी.पी. शर्मा, संतगुरु रविदास वाणी, सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978 पद 86

6 वही, पद 59

7 वही, पद 57

8 वही, पद 13

9 वही, पद 58

10 वही, पद 122

11 वही, पद 83